तूलिका

2019

अट्ठाईसवां अंक

वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका

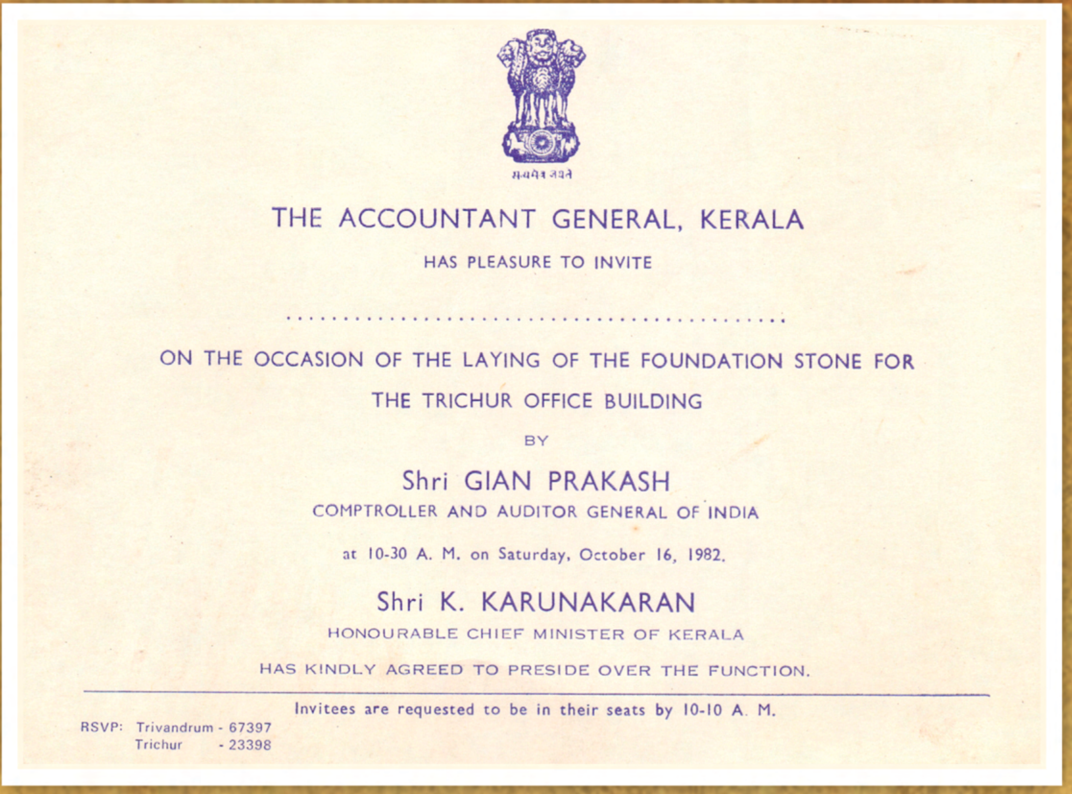

सत्यमेव जयते

THE ACCOUNTANT GENERAL, KERALA

HAS PLEASURE TO INVITE

....

ON THE OCCASION OF THE LAYING OF THE FOUNDATION STONE FOR

THE TRICHUR OFFICE BUILDING

BY

Shri GIAN PRAKASH

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA

at 10-30 A. M. on Saturday, October 16, 1982.

Shri K. KARUNAKARAN

HONOURABLE CHIEF MINISTER OF KERALA

HAS KINDLY AGREED TO PRESIDE OVER THE FUNCTION.

Invitees are requested to be in their seats by 10-10 A. M.

RSVP: Trivandrum - 67397
Trichur - 23398

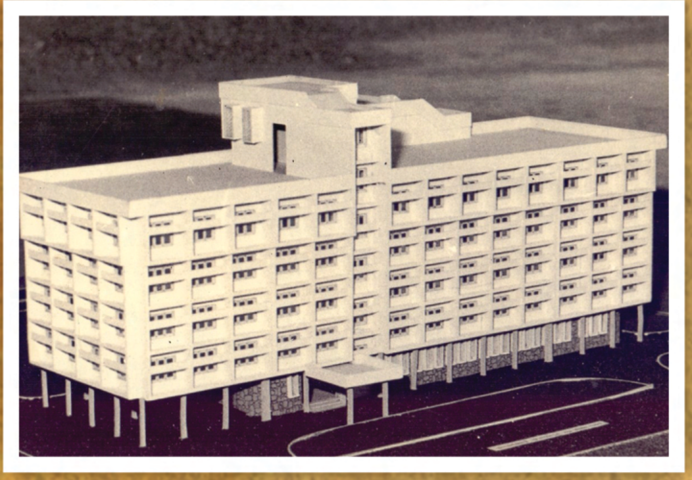

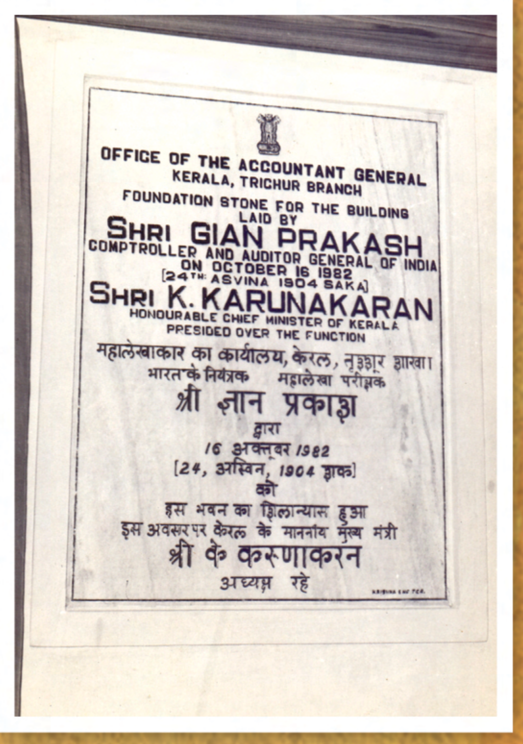

...शुभारंभ...

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग ✦ INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

तूलिका

वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका

2019

प्रकाशक

महालेखाकार (सा एवं सा क्षे ले प)

तथा

महालेखाकार (आ रा क्षे ले प) के कार्यालय, केरला

तृशूर शाखा

प्रकाशन	:	तूलिका वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका 2019-20
प्रकाशक	:	उप महालेखाकार (सा.क्षे. I व स्था.नि.)
अंक	:	अट्ठाईसवां
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा
मुद्रणालय	:	मैक वर्ल्ड, तृशूर

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री एस सुनील राज

महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)
का कार्यालय, केरला

संरक्षक

श्री. को.प. आनंद

महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) के कार्यालय, केरला

संपादक मंडल

परामर्शदाता
श्री के जे टॉमी
उप महालेखाकार (आ.क्षे. II)

मुख्य संपादक
श्री पी सोमशेखर
उप महालेखाकार (सा.क्षे.-I व स्था.नि.)

सदस्य

श्री वी नारायणनकुट्टी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री के प्रभाकरन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती जे आर आशा
हिंदी अधिकारी

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका
हिंदी अधिकारी

श्री जी मुरलीकृष्णन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री सुशील कुमार गुप्ता
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

संदेश

हिंदी पत्रिका 'तूलिका' के नियमित प्रकाशन पर मुझे अतीव प्रसन्नता है। राजभाषा हिंदी हमारे मनमस्तिष्क में बसने वाली भाषा है। यही कारण है कि हिंदी सुदूर पूर्व से लेकर पश्चिम एवं उत्तर से लेकर दक्षिण भारत तक बड़ी सहजता से बोली व समझी जाती है। यह कर्मचारियों की रचनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के साथ-साथ विचारो की अभिव्यक्ति का अवसर भी प्रदान करती है।

हिंदी पत्रिका 'तूलिका' राजभाषा की उन्नति एवं विकास की दिशा में किया गया एक विनम्र प्रयास है। मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका इसी तरह अपने पथ पर अग्रसर होती रहेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल व रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं।

को.प. आनंद

महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)

संदेश

कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'तूलिका' के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर हार्दिक अभिनंदन। हमारा देश सांस्कृतिक और धार्मिक वैविध्य की वजह से भाषायी विभिन्नताओं से संपन्न है। इन विविधताओं के धरातल पर पनपी भाषा के रूप में हिंदी भाषा का अपना महत्व है जिसमें देशी भाषाओं के ही नहीं बल्कि विदेशी भाषाओं के शब्दों को भी आत्मसात करने की क्षमता है। कार्यालयीन हिंदी पत्रिका ना केवल कार्यालय के कर्मचारियों के भावों को आईना प्रदान करती है, अपितु कार्यालय में राजभाषा के प्रति हमारे निष्ठापूर्ण आचरण को भी प्रतिबिंबित करती है। इसी दिशा में पत्रिका का यह अंक राजभाषा हिंदी के लक्ष्यों को पूरा करने की दिशा में एक छोटा सा कदम है। पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को उनके सराहनीय प्रयासों के लिए बधाई।

मंगलकामनाओं के साथ......

एस. सुनील राज

महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)

संदेश

हमारे कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका 'तूलिका' का 28वां अंक सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे असीम प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में गृह पत्रिका का प्रकाशन एक ठोस कदम है। यह पत्रिका ना सिर्फ कार्यालय वरन् इसके कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी के प्रति लगाव उत्पन्न करने में सराहनीय भूमिका अदा कर रही है।

अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति प्रेम, लगाव एवं जिम्मेदारी का भाव उजागर करने में यह पत्रिका एक सार्थक प्रयास है। इस प्रयास में हम सफल भी रहे हैं।

इस सामूहिक प्रयास के लिए समस्त सम्पादक मंडल, पत्रिका परिवार के सदस्यों एवं रचनाकारों को मेरी तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

के.जे. टोमी

उप महालेखाकार (आ.क्षे.II)

संदेश

हमारे कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका 'तूलिका' के नूतन अंक (28वां) का प्रकाशन मेरे लिए अत्यंत गौरव का क्षण है। इस पत्रिका को एक आदर्श और परिपूर्ण पत्रिका बनाने के सफल प्रयास हेतु मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सम्पादक मंडल तथा ओजस्वी रचनाकारों को साधुवाद देता हूँ। पत्रिका के संपादन में महालेखाकार महोदय श्री एस सुनील राज 'मुख्य संरक्षक' की मार्गदर्शक भूमिका, हमारे लिए गागर में सागर भरने के समान रही है। उनके रचनात्मक परामर्श ने पत्रिका को और अधिक सुनियोजित और सारगर्भित करने में सराहनीय योगदान दिया है।

मै आशा करता हूँ कि पत्रिका का प्रकाशन, कार्यालय के कर्मचारियों और अधिकारियों में हिन्दी में अधिकाधिक काम करने के प्रति रूचि जाग्रत करेगा एवं इस सुदीर्घ परंपरा को बनाए रखने हेतु प्रोत्साहित करेगा।

'तूलिका' आगे भी उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, यही मेरी शुभकामना हैं।

पी. सोमशेखर

पी. सोमशेखर

उप महालेखाकार (सा.क्षे.I व स्था.नि.)

तूलिका
2019
अट्ठाईसवां अंक

अनुक्रमणिका

पिता 10
अनुप्रिया अनिल,
सुपुत्री, श्री. ई.के. अनिल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रकृति की लीला न्यारी 10
अश्वनी अनिल
सुपुत्री, श्री ई.के. अनिल,वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जल का महत्व 11
श्री क्रिस्टीयो जॉय, एम.टी.एस

समय का सदुपयोग 12
श्री अनूप पी वी, एम टी एस

पशु मनोविज्ञान 13
श्री एस चिराग,
सुपुत्र, श्री पी सोमशेखर, उप महालेखाकार

गणतन्त्रता दिवस समारोह की झलकियां 15

हिंदी प्रोत्साहन योजना 2018-19 के अंतर्गत हिंदी में निर्धारित प्रतिशतता में कामकाज करने हेतु पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारी 17

केरला- वाकई देवों की भूमि 18
श्री. सुशील कुमार गुप्ता, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मान लेना बसंत आ गया। 20
श्री ई.के. अनिल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

चक्रवात की ए बी सी डी 21
श्री सुधीर टी.वी., वरिष्ठ लेखापरीक्षक

लोक स्वास्थ्य और स्वच्छ भारत 22
संजना सुधीर,
सुपुत्री श्री. सुधीर टी.वी., वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2019 की झलकियां 23

प्रकृति को निहारना 26
श्रीमती सान्तम्मा पी एन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

लड़कियां 27
मयूक राजीव, सुपुत्र, श्री राजीव पी पी, लिपिक

विद्या और अविद्या 28
श्रीमती अश्वती एम,
सुपुत्री, श्रीमती सान्तम्मा पी एन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

धरती माँ 29
मेघना राजीव, सुपुत्री, श्री राजीव पी पी, लिपिक

जीवन के मूल्य 30
श्रीमती अश्वती लक्ष्मणन
सुपुत्री, श्रीमती सुधा पी.आई, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

आज के युग में सोशल मीडिया 31
श्रीमती सुधा पी.आई., वरिष्ठ लेखापरीक्षक

साथी हाथ बढ़ाना 33
देविका के. दीपक
सुपुत्री, श्री दीपक के. वी. , वरिष्ठ लेखापरीक्षक

स्वच्छता 34
श्री. नारायणनकुट्टी वी. वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अजन्मी बेटी कि पुकार 36
श्रीमती सिंधू यू पी, स.ले.प.अ

संपादक की कलम से

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'तूलिका' का 28वां अंक आप सभी पाठकों के आस्वाद के लिए प्रस्तुत है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के विस्तार की संभावनाओं को कार्यरूप में परिवर्तित करने हेतु संलग्न और समर्पित रही है। पत्रिका के बहुरंगी लेख इस कार्यालय के कर्मचारियों की सामाजिक - सांस्कृतिक विविधता के साथ ही उनमें एकता के परिचायक है। इस पत्रिका में बहुविध सामग्री का संयोजन है। आशा है कि यह अंक हिंदी के आत्म-साक्षात्कार का अवसर प्रदान करेगा और इस सामर्थ्य के लिए हमें प्रतिश्रुत कर सकेगा।

आप सभी पत्रिका के प्रति सदैव अपना सहयोग एवं स्नेह बनाए रखे जिससे आने वाले अंकों को और भी अधिक ज्ञानवर्धक एवं आकर्षक बनाया जा सके।

आपको यह अंक कैसा लगा यह जानने की जिज्ञासा जरूर रहेगी। इस बारे में अपने विचार कृपया पत्र के माध्यम से अवगत कराएं। आपके सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

संपादक

अनुप्रिया अनिल,
सुपुत्री, श्री. ई.के. अनिल,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पिता

कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता,
कभी धरती तो कभी आसमान है पिता,
जन्म दिया है अगर माँ ने,
जानेगा जिससे जग वो पहचान है पिता,
कभी बनके घोड़ा घुमाता है पिता,
माँ अगर पैरो पे चलना सिखाती है,
तो पैरो पे खड़ा होना सिखाता है पिता।।
कभी रोटी तो कभी पानी है पिता,
कभी बुढ़ापा तो कभी जवानी है पिता,
माँ अगर है मासूम सी लोरी,
तो कभी ना भूल पाउंगा वो कहानी है पिता।।
कभी हंसी तो कभी अनुशासन है पिता,
कभी मौन तो कभी भाषण है पिता,
माँ अगर घर में रसोई है,
तो चलता है जिससे घर वो राशन है पिता,
कभी ख्वाब को पूरी करने की जिम्मेदारी है पिता,
कभी आँशुओं में छिपी लाचारी है पिता,
माँ गर बेच सकती है जरूरत पे गहने,
तो जो अपने को बेच दे वो व्यापारी है पिता,
कभी हंसी और खुशी का मेला है पिता,
कभी कितना तन्हा और अकेला है पिता,
माँ तो कह देती है अपने दिल की बात,
सब कुछ समेट के आसमान सा फैला है पिता।।

अश्वनी अनिल
सुपुत्री, श्री ई.के. अनिल,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रकृति की लीला न्यारी

प्रकृति की लीला न्यारी,
कहीं बरसता पानी, बहती नदियाँ,
कही उफनता समुद्र है,
तो कहीं शांत सरोवर है।

प्रकृति का रूप अनोखा कभी,
कभी चलती साए- साए हवा,
तो कभी मौन हो जाती,
प्रकृति की लीला न्यारी है।

कभी गगन नीला, लाल, पीला हो जाता,
तो कभी अंधियारी रात मे चाँद-तारे टिम टिमाते हैं
प्रकृति की लीला न्यारी है।

कभी सूखी धरा धूल उड़ाती है,
तो कभी हरियाली की चादर ओढ़ लेती है,
प्रकृति की लीला न्यारी है।

कहीं सूरज एक कोने में छुपता है,
तो दूसरे कोने से निकलकर चौका देता है,
प्रकृति की लीला न्यारी है।

जल का महत्व

श्री क्रिस्टीयो जॉय,
एम.टी.एस

जल प्रकृति की अमूल्य देन है। जीवित रहने के लिए जल अति आवश्यक है। अन्न के बिना हम कई दिनों तक भूखे रह सकते हैं परंतु जल के बिना जीवित रहना असंभव है। जल प्रत्येक जीव की आवश्यकता है। मनुष्य ही नही पेड़-पौधे, पशु-पक्षी भी जल के बिना जीवित नहीं रह पाते। जल के बिना तो पूरी वनस्पति ही समाप्त हो जाएगी।

यदि जल न होता तो क्या होता? जल के बिना न फसलें होती, न फल, न सब्जियां, न घास-फूस कुछ भी न होता। चारों ओर क्या होता? कुछ भी नहीं। कोई भी प्राणी जीवित न रहता। धरती अनाज उत्पन्न न करती, पशु भोजन के बिना रहते।

जल दो प्रकार का होता है - एक खारा और दूसरा मीठा। समुद्र का जल खारा होता है जो पीने के काम में नही आ पाता। बहता हुआ जल सामान्यतः शीतल होता है जबकि ठहरे हुए जल में अनेक विकार आ जाते हैं। कुछ ही दिनों में इनसे बदबू आने लगती है तथा कीड़े - मकौड़ो व मच्छरों के लिए ऐसा जल घर बन जाता है जिससे बहुत सारी बिमारियां होती हैं। हमे अपने घर के आस-पास जल का ठहराव नही होने देना चाहिए। इससे ना सिर्फ आस-पड़ोस साफ सुथरा रहेगा बल्कि हम स्वस्थ्य भी रहेंगे।

हमे जल को बर्बाद न कर इसकी बचत करनी चाहिए। जल का इस्तेमाल कम से कम करना चाहिए। गर्मी के मौसम में पानी की आवश्यकता अधिक होती है। अपने वाहन को पानी से न धोकर उसे भीगे हुए वस्त्र से ही साफ करना चाहिए। पानी का प्रयोग लापरवाही से नही करना चाहिए। बढ़ती आबादी के कारण पानी का प्रयोग भी अधिक होने लगा है। मकान बनाने के लिए, पीने के लिए, स्नान के लिए, कपड़े व बर्तन धोने के लिए हमे पानी की आवश्यकता होती है इसलिए हमें पानी की बचत करनी चाहिए।

जल केवल हमारी प्यास ही नही बुझाती बल्कि इससे बिजली भी पैदा की जाती है। नदियों पर बड़े-बड़े बांध बनाकर पानी को रोका जाता है जिससे बिजली पैदा की जाती है। इस पानी को नहरों द्वारा खेती के लिए प्रयोग किया जाता है। बांध के पीछे रोके हुए जल को झीलों के रूप में बदला जा रहा है जिसमें मछली पालन किया जाता है। यदी हम आज जल का उपयोग सही तरीके से करेंगे तभी हमारा भविष्य सुरक्षित हो पाएगा। वर्तमान में पानी की बचत करके हम अपना भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं। हमें देश की खुशहाली के लिए पानी की एक - एक बूंद को बचाना होगा तभी हमारा भविष्य भी सुरक्षित हो पाएगा।

समय का सदुपयोग

श्री अनूप पी वी,
एम टी एस

समय वह अमूल्य धन है जिसे भगवान ने हर जीवित प्राणी को उपहारस्वरूप दिया है। समय का पहिया सदैव चलता रहता है। गया हुआा वक्त कभी वापस नही आता। समय कीमती है, उसका उपयोग करना सीखना ही उन्नति की कुंजी है। कहावत भी है- गया वक्त कभी हाथ नही आता। समय का सदुपयोग करने के लिए, प्रत्येक कार्य को करने का समय निश्चित करना चाहिए। अगर हम सब काम समय पर कर लें तो पायेंगे कि हमारा जीवन कितना सुखद, शान्त और व्यवस्थित है। हमें कभी पछताना नही पड़ेगा। जो व्यक्ति समय का महत्व नहीं समझते, बेकार गप्पें मारते हैं, इधर-उधर घूमते हैं, योजनाबद्ध तरीके से काम नहीं करते, वह जीवन की दौड़ में पीछड़ जाते हैं। उनका कोई काम समय पर पूरा नही होता। समय, सूखी रेत की तरह उनके हाथ से फिसल जाता है और वह हाथ मलते रह जाते है। समय निकल जाने के बाद हम कुछ नहीं कर सकते। विद्यार्थियों के जीवन में समय का महत्व और भी अधिक है। समय निकलने के बाद हम कुछ नहीं कर सकते इसलिए हमें अपना हर काम समय पर समाप्त कर लेना चाहिए। समय धन से भी ज्यादा कीमती है। क्योंकि यदि धन को खर्च कर दिया जाए तो वह वापस प्राप्त किया जा सकता है हालांकि यदि हम एक बार समय को गवां देते हैं, तो इसे वापस प्राप्त नहीं कर सकते हैं। समय के बारे में एक सामान्य कहावत है कि "समय और ज्वार - भाटा कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करते हैं।" समय बिना किसी रूकावट के निरंतर चलता रहता है। यह कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता हैं।" समय पृथ्वी पर सबसे कीमती वस्तु है, इसकी तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती है। यदि एक बार यह चला जाए, तो कभी वापस नही आता। यह हमेशा आगे की ओर सीधी दिशा में चलता है न कि पीछे की ओर। इस संसार में सब कुछ समय पर निर्भर करता है, समय से पहले कुछ भी नही होता। कुछ भी करने के लिए समय की आवश्यकता होती है। यदि हमारे पास समय नही है, तो हमारे पास कुछ भी नही है। कुछ लोग समय से ज्यादा अपने धन को महत्व देते हैं हालांकि, सत्य तो यही है कि समय से ज्यादा कीमती कुछ भी नहीं है। हमें दूसरों की गलतियों से सीखने के साथ ही दूसरों की सफलता से प्रेरित होना चाहिए। हमें अपने समय का उपयोग कुछ कामों को करने में करना चाहिए ताकि, हमें समय, समृद्धि दे, न कि नष्ट करे।

श्री एस चिराग,
सुपुत्र, श्री पी सोमशेखर,
उप महालेखाकार

पशु मनोविज्ञान

कुत्ते, ऐसे जानवर हैं जिनका शरीर शिकारियों के डर तथा आराम से दूर रहने के कारण सामान्यतः गर्म रहता है, सोने के दौरान ये अक्सर घबरा जाते हैं। इनमें अलग होने या बिछड़ जाने की चिंता तीव्र होती है। इस समस्या से निजात पाने का सर्वोत्तम उपाय यह हो सकता है कि इनके मालिक के कपड़े इनके पास रखे जाएं, क्योंकि इनमें गंध की बहुत अच्छी समझ होती है। एक खुश कुत्ते के पालन के लिए देखभाल के साथ प्यार बहुत जरूरी है। उन्हें सुरक्षित, सतर्क और खुश महसूस कराने के लिए स्नेह, ध्यान और अनुशासन के स्वस्थ संतुलन की आवश्यकता होती है। इनमें मूल मानवीय भावनाओं जैसे कि प्रसन्नता, भय उदासी यहां तक कि ईर्ष्या के अनुभूति की क्षमता होती है। उन्हें केवल इस बात का ध्यान होता है कि उन्हे पुरस्कृत किया गया न कि पुरस्कार का। अगर कुत्ता दाई ओर घूमता है तो इसका मतलब है कि वह खुश है, अगर बाई ओर घूमता

कॉलेज के दौरान् प्रस्तुत परियोजना कार्य का एक अंश।

है तो इसका मतलब वह दुःखी है अगर वह अपनी पूंछ नीचे करता है तो इसका मतलब वह घबराया हुआ है अगर वह घबराहट के साथ अपनी पूंछ तेजी से हिला रहा है तो यह आक्रामक होने का इशारा है। खुशी के भाव जहां कुत्ते को उत्तेजित और चंचल करते हैं वहीं दुःख के भाव उसे उदास और भयभीत। अगर उसे आपकी आवाज से भय का आभाष होता है जो खतरे का संकेत है तो वह आपकी सुरक्षा के लिए तुरंत हाजिर हो जाता है। पशु-चिकित्सकों के प्रतीक्षालयों के 30 प्रतिशत कुत्ते बेहद तनावग्रस्त होते हैं। ये अच्छी तरह से समझ जाते है कि आप इन्हें पशु-चिकित्सालय ले जाने वाले हो। ऐसा माना जाता है कि 58 प्रतिशत कुत्तों को पशु-चिकित्सकों के पास जाने से पूर्व ही उन्हें इसका आभाष हो जाता है। इन तौर-तरीको से बचने के भी उपाय हैं जैसे कि सिर्फ पशु-चिकित्सकों के पास जाने के अलावा अपने पालतू कुत्ते को बाहर घुमने के लिए भी आप अपनी कार में ले जाए, जिससे कि उसे आपके कार में असहज महसूस न हो।

बिल्लियों को खरोंच विरासत में मिली हुई हैं, तनाव से मुक्ति तथा अन्य भावों की अभिव्यक्ति के लिए ये खरोंच का प्रयोग करती हैं। यहां तक कि अपने शरीर तथा तलवे को भी वो एक अलग ही तरीके से खरोंचती हैं। खरोंचना मानों बिल्ली होने का पर्याय है। इन्हें खरोंच से दूर रखने के लिए आपके घर के फर्नीचरों में पर्याप्त मात्रा में खरोंचदार गद्दी और पोस्ट लगी होनी चाहिए। खरोंचदार गद्दी की बनावट भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। उन्हें न सिर्फ सीधा वरन् क्षैतिज और तीरछे बनावठ के गद्दे की भी चाह होती है। इनके लिए खिंचाव तथा खरोंच के कोण भी महत्व रखते हैं अतः आप अपने बिल्ली को इसके लिए विकल्प भी मुहैया कराइए। इनके टॉवर स्थिर तथा मजबूत होने चाहिए साथ में ये आकार में भी कम से कम इतने बड़े हो कि वो सरलता से स्वयं का खिंचाव कर सकें। इन्हें खरोंच के लिए स्पर्शयुक्त सतह के प्रकार उपलब्ध कराना भी आवश्यक है, जिससे कि वे पौधे की रस्सी या कपड़े, कार्डबोर्ड और यहां तक कि खुली हुई लकड़ी आदि का आनंद ले सकें।

गणतन्त्रता दिवस
2020

मुख्यालय तिरुवनंतपुरम

महालेखाकार (सा एवं सा क्षे ले प)
एवं प्रधान महालेखाकार (ले व ह)

महालेखाकार (सा एवं सा क्षे ले प),
प्रधान महालेखाकार (ले व ह) एवं महालेखाकार (आ रा क्षे ले प)

गणतन्त्रता दिवस
2020

मुख्यालय तिरुवनंतपुरम

महालेखाकार (सा एवं सा क्षे ले प)
सभा को संबोधित करते हुए।

हिंदी प्रोत्साहन योजना 2018-19 के अंतर्गत हिंदी में निर्धारित प्रतिशतता में कामकाज करने हेतु पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारी

श्रीमती नीनू एम.डी.,वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्रीमती सान्तम्मा पी.एन.,वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्रीमती अभीना कृष्णन,वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्रीमती मंजु सी., लेखापरीक्षक

श्री. सुशील कुमार गुप्ता,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

केरला- वाकई देवों की भूमि

संस्कृतिक विविधता से परिपूर्ण हमारे देश भारत के कण - कण मे संस्कृति का वास है। इस बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक एवं बहुधार्मिक समाज में दूरी के साथ-साथ भाषा, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन और रिवाज में बदलाव यहां के सांस्कृतिक विविधता की एक विशेषता है। हर राज्य की अपनी अलग-अलग संस्कृति, भाषा और रिवाज है। संस्कृति और भाषा के आधार पर यहां के विभिन्न समुदायों द्वारा कई प्रकार के त्यौहार मनाए जाते हैं जिनमें कुछ राष्ट्रीय त्यौहार भी हैं।

दक्षिण भारत के त्यौहारों में से एक विशु की गिनती केरला के मुख्य त्यौहारों में की जाती है। संस्कृत भाषा में विशु का अर्थ "बराबर" है। इस शुभ दिवस का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इस दिन केरला में दिन और रात की अवधि बराबर होती हैं। मलयाली लोगों का यह त्यौहार केरला मे बहुत उत्साह और खुशी के साथ मनाया जाता है। इसी दिन को देश के अलग-अलग राज्यों में विभिन्न नामों यथा असम में बिहू, पंजाब में बैशाखी तथा तमिलनाडु में पुत्ताण्ड के नाम से मनाया जाता है। विशु सबसे लोकप्रिय दक्षिण भारतीय त्योहारों में से एक है और इसे व्यापक रूप से केरला और तमिलनाडु में मनाया जाता है। यह इन राज्यों के निवासियों के लिए पारंपरिक नया साल है। इसे मलयालम नव वर्ष भी कहा जाता है। खगोलीय रूप से यह त्यौहार वर्नल विषुव का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए, विशु दिवस को वर्णाल विषुव दिनों में से एक माना जाता है।

मलयालम वर्ष के पहले मास का पहला दिन, विशु दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह विशु उत्सव की तारीख है जो आम तौर पर अप्रैल-मई मे होती है। विशु

को दक्षिण भारतीय वैशाखी, बिहू या पुत्ताण्ड भी कहते है, क्योंकि इसी तरह के उत्सव भारत के अन्य हिस्सों में भी उसी तारीख को मनाए जाते हैं। आने वाले नए साल में लोग अपने सुमंगल भविष्य की कामना करते हैं। इस त्यौहार का दूसरा महत्व यह है कि यह समय नई फसलों की बुआई का होता है। इसलिए लोग अपनी अच्छी फसल के लिए ईश्वर से कामना करते हैं। विशु त्यौहार को मनाने के पीछे कई पौराणिक कहानियां भी प्रचलित हैं, और इसी तरह की एक कहानी के अनुसार विशु वह दिन है, जब भगवान कृष्ण ने नरकासुर नामक एक राक्षस का वध किया था। एक अन्य विश्वास के अनुसार विशु उत्सव सूर्य देव की वापसी के रूप में मनाया जाता है। यह दिन भगवान श्रीकृष्ण और भगवान विष्णु की पूजा करके मनाया जाता है।

विशु के शुभ दिन की सुबह, शांतिपूर्ण और समृद्ध वर्ष की शुरुआत करने के लिए, वर्ष की पहली दृष्टि को महत्वपूर्ण माना जाता है। सरल तरीकें से समझा जाए तो लोगों का मानना है कि वर्ष के पहले दिन, पहली नजर किसी शुभ दर्शन से की जाए, ताकि वर्ष की शुरुआत शुभ हो। और इस प्रक्रिया या अनुष्ठान को विशुक्कणी के रूप में जाना जाता है, जिसकी तैयारी विशु वर्ष की पूर्व संध्या से होती है, और यह फल, आनाज, सब्जियों, दीपक, फूल, नारियल, सोना, दर्पण, हिंदू पवित्र पुस्तकें: रामायणम या भगवतगीता आदि जैसी विभिन्न शुभ चीजों का संग्रह है जो एक बड़े बर्तन में, भगवान कृष्ण की मूर्ति के साथ पूजा कक्ष में रखा जाता है।

विशु पर्व पर अन्य त्यौहारों की तरह अनेक पकवान बनाए जाते है। हालांकि, हर त्यौहार की तरह, विशु में भी पारंपरिक व्यंजनों का सेट होता है, जो अधिकांश मलयाली परिवारों में तैयार होता हैं। भोजन में मौसमी और साथ ही मुख्य व्यंजन भी शामिल हैं जिन्हें आमतौर पर केले के पत्ते पर खाया जाता है। विशु उत्सव पर स्वाद लेने वाले सबसे प्रामाणिक व्यंजनों में से एक विष्णु कांजी है।

वुशु कट्टा एक अन्य पकवान है जिसे इस अवसर पर काफी पसंद किया जाता है, इसके अलावा तोरन भी इस पर्व के व्यंजनों का प्रमुख हिस्सा है।

मम्पाज़प्पुलिसरी एक मौसमी पकवान है जिसे आमों का उपयोग करके तैयार किया जाता है। इसमें एक तरल पेय जैसी स्थिरता है और स्वाद में मीठा और खट्टा है। मम्पाज़प्पुलिसरी को चावल के साथ खाया जाता है। यह पकवान इस अवसर पर लोगों का पसंदीदा व्यंजन है।

केरला की संस्कृति के पर्याय, ये त्यौहार कहीं न कहीं भारत की बहुसांस्कृतिक विरासत को प्रबल और महत्वपूर्ण बनाते हैं। ऐसे पारंपरिक उत्सव, संस्कृति के लिए पोषक की भूमिका निभाते हैं। यहां के लोगो का इनकी संस्कृति के प्रति अगाध प्रेम/लगाव इनकी संस्कृति को अनूठा और विशिष्ट बनाता है। इन विशिष्टताओं को सहेजते और सजोते केरला के ये त्यौहार भारतीय सांस्कृतिक पटल पर एक अमिट छाप छोड़ते हैं।

श्री ई.के. अनिल
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मान लेना बसंत आ गया।

बागों में जब बहार आने लगे,
कोयल अपना गीत सुनाने लगे,
कलियों में निखार छाने लगे,
भँवरे जब उनपर मंडराने लगे,
मान लेना बसंत आ गया,
रंग बसंती सा छा गया।।

खेतों में फसल पकने लगे,
खेत खलिहान लहलहाने लगे,
डाली पे फूल मुस्कुराने लगे,
चारों ओर खुशबू फैलाने लगे,
मान लेना बसंत आ गया,
रंग बसंती सा छा गया।।

चाँद भी जब खिड़की से झाँकने लगे,
चुनरी सितारों की झिलमिलाने लगे,
यौवन जब फाग गीत गुनगुनाने लगे,
चेहरों पर रंग, अबीर, गुलाल छाने लगे,
मान लेना बसंत आ गया,
रंग बसंती सा छा गया।।

श्री सुधीर टी.वी.,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

चक्रवात की ए बी सी डी

चक्रवात कम वायुमण्डलीय दाब के चारों ओर गर्म हवाओं की तेज आँधी को कहा जाता है। दक्षिणी गोलार्द्ध में इन गर्म हवाओं को 'चक्रवात' के नाम से जानते हैं और ये घड़ी की सुई के चलने की दिशा में चलती हैं। जबकि उत्तरी गोलार्द्ध में इन गर्म हवाओं को 'हरिकेन' या 'टाइफून' कहा जाता है। ये घड़ी की सुई के विपरीत दिशा में चलती हैं।

गर्म क्षेत्रों के समुद्र में सूर्य की भयंकर गर्मी से हवा गर्म होकर कम वायुदाब का क्षेत्र बना देती है। हवा गर्म होकर तेज़ी से ऊपर जाती है और ऊपर की नमी से संतृप्त होकर संघनन से बादलों का निर्माण करती है। रिक्त स्थान को भरने के लिए नम हवाएँ तेज़ी के साथ नीचे जाकर ऊपर आती हैं। फलस्वरूप ये हवाएँ बहुत ही तेज़ी के साथ उस क्षेत्र के चारों तरफ़ घूमकर घने बादलों और बिजली कड़कने के साथ- साथ मूसलाधार बारिश करती हैं।

बांग्लादेश, भारत, ओमान, पाकिस्तान, श्रीलंका, मालदीव, म्यांमार, तथा थाइलैण्ड उत्तरी हिन्द महासागर क्षेत्र के आठ देश हैं जो एक साथ मिलकर आने वाले चक्रवातों के नाम तय करते हैं। जैसे ही चक्रवात इन आठों देशों के किसी भी हिस्से में पहुँचता है, सूची से अगला दूसरा सुलभ नाम इस चक्रवात का रख दिया जाता है। इस प्रक्रिया के चलते तूफ़ान को आसानी से पहचाना जा सकता है और बचाव आभियानों में भी मदद मिलती है। किसी नाम का दोहराव नहीं किया जाता है।

चक्रवातों के नाम रखने की प्रवृत्ति ऑस्ट्रेलिया से शुरू हुई थी। 19 वीं सदी में यहाँ चक्रवातों का नाम भ्रष्ट राजनेताओं के नाम पर रखा जाने लगा था। इन आठ देशों द्वारा साल 2004 से चक्रवातों के नामकरण की शुरूआत की गई थी। इस बार नाम रखने की बारी बांग्लादेश की थी। उसकी सूची में प्रस्तावित नाम 'फेनी' था, इसीलिए कुछ ही समय पहले उड़ीसा में आये चक्रवात का नाम 'हुदहुद' रखा गया था। पश्चिम मध्य अरब सागर में बने गम्भीर चक्रवातीय तूफ़ान को 'नीलोफर' नाम पाकिस्तान ने दिया था।

लोक स्वास्थ्य और स्वच्छ भारत

संजना सुधीर,
सुपुत्री, श्री सुधीर टी.वी.,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

नगरपालिका के नियम जिस समस्या के समाधान में निष्फल रहें, उसके जवाब के तौर पर आज से चार वर्षों पूर्व सरकार द्वारा स्वच्छ सर्वेक्षण पहल प्रारंभ की गई। यह एक ऐसी प्रणाली है जिसमें स्वच्छ शहरों को रैंकिंग प्रदान की जाती है। स्वच्छता और लोक स्वास्थ्य राज्य सरकार की जिम्मेदारी हैं और इसमें कोई संशय नही कि नगरीय अपशिष्ट में दिनोंदिन हो रही बेतहासा वृद्धि जो लोक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, के निपटान प्रबंधन में सरकारी निकाय असफल रहे हैं।

इस समस्या को सिर्फ सफाई, पेयजल और स्वास्थ्य की समस्या के तौर पर नही देखा जा सकता, कही न कही यह सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय और राजनीतिक पहलूओं को भी प्रभावित करते है। साथ ही स्वच्छता की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की ना होकर हम सभी भारतीयों की नैतिक जिम्मेदारी है। इस दिशा में वैश्विक पटल पर संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जारी सतत् विकास लक्ष्यों का क्रमांक 6 स्वच्छता तथा पेयजल की आपूर्ति से संबंधित है जो वर्ष 2030 तक सभी के लिए सुरक्षित और किफायती पेयजल सर्वत्र और समान रूप से उपलब्ध कराने के साथ ही स्वच्छता और साफ-सफाई सुलभ कराने को समर्पित है। इस दिशा में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रयास जारी हैं।

स्वच्छता से जुड़े आंकड़ें बताते हैं कि पिछले एक दशक में दुनिया में पेयजल के बेहतर स्त्रोत का इस्तेमाल करने वाली आबादी का अनुपात 76 प्रतिशत से बढ़कर 91 प्रतिशत हो गया है फिर भी प्रतिदिन लगभग 1000 बच्चे स्वच्छता और जल से जुड़ी बिमारियों के कारण काल के गाल में समा जाते हैं। खुले में शौच की समस्या से भी पूरी तरह निजात नही पाया जा सका है।

स्वच्छता में सुधार, सरकारी प्राथमिकताओं में से एक है और इस दिशा में सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रम शुरु किए गए हैं जिनमें स्वच्छ भारत अभिमान, राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम और गंगा संरक्षण के लिए नमामि गंगे जैसे कार्यक्रम शामिल है। इन अभियानों का उद्देश्य केवल आसपास की सफाई तथा पेयजल की उपलब्धता तक ही सीमित नहीं है अपितु नागरिकों की सहभागिता से अधिक से अधिक पेड़ लगाना, उनके व्यवहार में बदलाव लाना, कचरा मुक्त वातावरण बनाना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर एक स्वच्छ भारत का निर्माण करना आदि है।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह
2019

हिन्दी पखवाड़ा समारोह

2019

हिन्दी पखवाड़ा समारोह
2019

श्रीमती सान्तम्मा पी एन,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रकृति को निहारना

कहा जाता है कि प्रकृति ईश्वर की बनाई हुई अद्भुद् कृति है। यह सात रंगो से बनी हुई एक विस्मयकारी छटा बिखेरती है। सत्य तो यह है कि आज तक मनुष्य इस महान कृति को पूरी तरह से अन्वेषित नहीं कर पाया है। यही कारण है कि कभी- कभी दिल करता है कि प्रकृति की गोद में जाकर केवल इसे निहारते रहें और ह्दय को प्रफुल्लित व तरोजाता करने वाली छटा को आँखों में उतारते रहें। यह अनंत है विशाल विराट है।

ऐसा करने के लिए आप गगनचुंबी पहाड़ पहाड़ियों में जा सकते है या लहरों से ओत- प्रोत गरजते हुए समुद्र के किनारे जाकर बैठ सकते हैं या फिर किसी गहन, हरे-भरे जंगल में चले जाइए अथवा किसी शांत, गंभीर अविरल बहती हुई नदी को निहार सकते हैं। प्रकृति की ऐसी ही किसी गोद में बैठकर महसूस किजिए ठंडी, महकी, भीनी-भीनी हवा के स्पर्श को, बिखरी हुई इन्द्रधनुषी छटा को। निहारिए, अपने चारों ओर शान से खड़े हुए वृक्षों व पौधों को। उनके निकट मंडराते हुए असंख्य कीटों को या फूलों का रसास्वादन करती हुई नाजुक सी रंग-बिरंगी तितलियों को। जीवन के विकट युद्ध में निरंतर अनेक छोटे जीवो को देखिए और नही तो चीटियों के बिल के पास जाकर देखिए कि परिश्रम व अनुशासन क्या होता है।

प्रकृति की सुंदरता का कोई अंत नही है। तो आज ही एक प्रण लिजिए। प्रकृति का अन्वेषण करने के लिए कभी-कभी समय निकालिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम इस अद्भुद प्रकृति को प्रदूषित न करें इसे विनाश से बचायें और इसकी रक्षा करने व इसे और सुन्दर बनाए रखने का हर संभव प्रयास करें।

मयूक राजीव,
सुपुत्र, श्री राजीव पी पी,
लिपिक

लड़कियां

लोग उन्हें समझते रहे लड़कियाँ,
जबकि वे थार में दमकती मरीचिका थी,
दरअसल वे फूल थी और फूल भी कहाँ,
उन्हें फूल समझना भी खुद को धोखे में रखना था।
दलअसल वे पँखुरियाँ भी बिखरी हुई,
वनस्पतिशास्त्रियों के विश्लेषण का शिकार बनती,
फिर पँखुरियाँ भी होती तो गनीमत थी।
वे, वो पत्तियाँ थी हरियाती हुई,
क्लोरोफिल, धूप और पानी से भोजन बनाती हुई।
पत्तियों का जन्म अकारथ था,
वे तो खिलखिलाती रंग होना चाहती थी।
झिलमिलाना चाहती थीं वे,
उल्लासमय प्रसन्न रंगों में खिलते,
एक रंग से दूसरे रंग के तिलिस्म में गायब होते हुए,
दरअसल सारा कुछ आँखों का धोखा था।

एक अबूझ पहेली सी होती हैं ये लड़कियाँ,
दिल में छिपाकर दर्द होंठों पर हर पल,
मुस्कान सजाए रहती हैं ये लड़कियाँ।
जीवन के रंगमंच पर सभी किरदारों को,
पूरी शिद्दत से निभाती हैं ये लड़कियाँ।।

तूने जब धरती पर सांस ली,
तब तेरे माँ - बाप तेरे साथ थें।
माता - पिता जब अंतिम सांस लें,
तब तू भी उनके साथ रहना।

मैं हूं भारतीय लड़की।

श्रीमती अश्वती एम,
सुपुत्री, श्रीमती सान्तम्मा पी एन,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

विद्या और अविद्या

विद्या वह क्लेश है जिसके वश में होकर मनुष्य अपने आप को ब्रह्म से अलग समझता हैं तथा इस मिथ्या भौतिक संसार को ही सत्य मानता है। अविद्या ही मनुष्य के सभी दुःखों का कारण है। परन्तु विद्या कल्पद्रुम के समान सभी मनोकामनाओं को पूरा करती है। विद्या सर्वश्रेष्ठ है, उसको न कोई चुरा सकता है, न लूट या छीन सकता है और न कोई खरीद सकता है। अविद्या माने मै कि भावना ही सबसे बड़ा अंधकार है। उससे अविद्या का नाश कर ज्ञान रूपी विद्या का प्रकाश देता है।

कबीरदास ने गुरू को गोविंद यानि ईश्वर से भी ऊँचा बताया है। क्योंकि गुरू की कृपा से ही गोविंद के दर्शन होते हैं। गुरू से प्राप्त विद्या ही अमरत्व देने वाली बात है।

"गुरू गोविंद दोऊ खड़े, काके लागु पाय।

बलिहारी गुरू आपने, जिन गोविंद दियो बताय।"

मेघना राजीव,
सुपुत्री, श्री राजीव पी पी,
लिपिक

धरती माँ

रहता था एक दुनिया जो था सबसे प्यारा,
होती थी खुशियों की बारिश हर सुबह - शाम,
खेल-कूद के अलावा नहीं था कुछ काम,
जुड़ा था पेड़ - पौधों से उसका नाम
धरती माँ है उसका नाम, बिछड़ गयी आजकल,
उसका नाम उसका काम।
तुम प्यारी सी धरती और मैं अनंत आसमान,
क्षितिज पर भी हमारा मिलन कहाँ हो पाता है।
सदियों तक रहेगा ऐसा,
अटूट हमारा नाता है।
पर फिर भी हमारा रिश्ता,
संपूर्ण कहाँ हो पाता है?
ऐ धरती माँ
तेरे बलिदानों का कर्ज कैसे मै चूकाऊँगी,
एक दिन तो तेरे लिए कुछ करके दिखाऊँगी।।

श्रीमती अश्वती लक्ष्मणन
सुपुत्री, श्रीमती सुधा पी.आई,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जीवन के मूल्य

एक बार की बात है, दो दोस्त रेगिस्तान से गुजर रहे थे। यात्रा के दौरान उनमें वाद विवाद हुआ और एक दोस्त ने दूसरे के चेहरे पर थप्पड़ मारा।

जिसे थप्पड़ मारा गया, उसे चोट लगी लेकिन बिना कुछ कहे, रेत में लिखा;

"आज मेरे सबसे अच्छे दोस्त ने मुझे थप्पड़ मारा।"

वे नखलिस्तान मिलने तक घूमते रहे, फिर वहां उन्होंने स्नान करने का फैसला किया। जिसको थप्पड़ मारा गया था वह घोड़ी में फंस गया और डूबने लगा लेकिन तभी दूसरे दोस्त ने उसे बचा लिया। डूबने से बच जाने के बाद, उसने एक पत्थर पर लिखा;

"आज मेरे सबसे अच्छे दोस्त ने मेरी जान बचाई।"

जिस दोस्त ने थप्पड़ मारा था और अपने सबसे अच्छे दोस्त को बचाया था, उसने दूसरे से पूछा;

"जब मैंने आपको चोट पहूंचाई तब आपने रेत में लिखा और जब मैने आपको डूबने से बचाया तब आपने एक पत्थर पर लिखा, आखिर ऐसा क्यों?"

दूसरे मित्र ने उत्तर दिया;

"जब कोई हमें ठेस पहुँचाता है तो हमें उसे रेत में लिख देना चाहिए जहाँ क्षमा की हवाएँ इसे मिटा सकती हैं। लेकिन, जब कोई हमारे लिए कुछ अच्छा करता है, तो हमें उसे पत्थर में उकेरना चाहिए, जहां कोई हवा उसे मिटा नहीं सकती है।"

कहानी का नैतिक:

अपने जीवन के मूल्यों को ज्यादा महत्व दें।

आज के युग में सोशल मीडिया

श्रीमती सुधा पी.आई.
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सोशल मीडिया, इंटरनेट आधारित संचार उपकरणों का ताना बाना हैं जो लोगों को एक-दूसरे के साथ संवाद करने, बातचीत करने और सूचनाओं के आदान-प्रदान में उपयोगी है।

हर चीज की तरह ही, सोशल मीडिया के भी अपने फायदे और नुकसान हैं।

सोशल मीडिया के लाभ :

सोशल मीडिया हमारे पुराने या नए दोस्तों, सहकर्मियों और किसी भी व्यक्ति के साथ बातचीत करने के लिए इंटरफ़ेस का एक उत्कृष्ट रूप है। सोशल मीडिया लोगों को उनकी पुरानी यादों को वापस लाने, नई यादों को मनाने और उनके जीवन में नए लोगों से मिलने में मदद करता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म संचार की दुनिया के लिए एक आशीर्वाद रहा है।

सोशल मीडिया अनिवार्य रूप से हर, लिंग, जाति, रंग और पंथ के सभी लोगों के लिए मनोरंजन लाता है। जब वे एक तस्वीर अपलोड करते हैं और उनके पोस्ट पर लाइक और कमेंट्स मिलते हैं तो किशोरों को बहुत अच्छा लगता है। जब बड़े वयस्क अपने बच्चों और पोते-पोतियों की तस्वीरें और वीडियो देखते हैं तो बहुत अच्छा महसूस करते हैं। सोशल मीडिया हर किसी को खुश करने का एक उत्कृष्ट काम करता है।

लोग विभिन्न सामाजिक मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से अपने जीवन के बेहतरी के लिए अवसर प्राप्त करते हैं। विदेशी छात्रों जिन्होंने कड़ी मेहनत की है, उन्हें विदेश में कालेजों के लिए महान अवसर मिलते हैं। नौकरी की तलाश करने वाला व्यक्ति अपनी इच्छित जगह में वांछित स्थिति के लिए सोशल मीडिया प्लेटफार्मों का उपयोग करता है। सोशल मीडिया उन उद्यमियों और सपने देखने वालों को भी मौका देता है जो अच्छे के लिए बदलाव लाना चाहते हैं। यह नए उभरते व्यवसायियों की मदद करता है जो अपने व्यवसाय को अधिक लोगों तक विस्तारित करना चाहते हैं।

तत्काल आवश्यकताओं की पूर्तिः

सोशल मीडिया के कारण, हमारी तत्काल आवश्यकताएं या यहां तक कि नियमित आवश्यकताएं केवल कुछ क्लिकों के साथ पूरी होती हैं। यदि हम कुछ खाने के लिए भूखे या तरस रहे हैं, तो हमें बिना किसी प्रयास के आसानी से और जल्दी से भोजन उपलब्ध हो जाता है। कपड़े, जूते और इलेक्ट्रॉनिक्स की तत्काल आवश्यकता को ऑनलाइन खरीदारी से पूरा किया जा सकता है।

कोई भी कुछ ही मिनटों में दुनिया के हर कोने का अपडेट प्राप्त कर सकता है। दुनिया के एक कोने में बैठे

व्यक्ति को दुनिया के दूसरे हिस्से के बारे में जानकारी मिल सकती है, जैसे कि किसी विशेष स्थान पर सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति कौन है। सोशल मीडिया, राजनीति, रुझानों, जीवन शैली, संगीत उद्योग, फिल्म उद्योग, गेमिंग उद्योग या उस मामले के लिए किसी भी चीज़ के बारे में हर जानकारी प्रदान करता है।

सोशल मीडिया के नुकसानः

सोशल मीडिया के उदय ने न केवल अच्छी चीजों को जन्म दिया है, बल्कि काफी नुकसान भी पहुंचाया है। उनमें से कुछ पर एक नजर डालते हैं।

मीडिया के उदय ने न केवल युवा पीढ़ी को बल्कि पूर्व पीढ़ी को और आधिक सामाजिक बना दिया है और इस तरह, सभी के बीच वास्तविक जीवन के संचार को कम कर दिया है। जितना अधिक लोग खुद को सोशल मीडिया में शामिल करते हैं, उतना ही वे इसके आदी हो जाते हैं और अपने परिवार और दोस्तों के साथ मेल-मिलाप से बचने की कोशिश करते हैं।

सोशल मीडिया के ज्यादा उपयोग से साइबर अपराधों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। साइबर क्राइम, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर किए गए वास्तविक जीवन के अपराध के समान ही है। सोशल मीडिया पर बहुत अधिक भरोसा लोगों को अपने व्यक्तिगत विवरणों को साँझा करने के लिए प्रेरित करता है, जिसके परिणामस्वरूप साइबर अपराधी सोशल मीडिया प्लेटफार्मो पर अपनी गोपनीयता का उल्लंधन कर रहे हैं। फिर कुछ हैकर्स साइबर अपराधों में योगदान करते हैं। यह एक तरीका है जिसमें सोशल मीडिया, गोपनीयता को बहुत आसानी से सेंध मार देता है।

सोशल मिडिया के ज्यादा उपयोग ने न केवल सोशल मीडिया पर बल्कि वास्तविक जीवन की बातचीत में भी हर जगह संक्षिप्त रूप और स्लैंग के अत्यधिक उपयोग को जन्म दिया है। लोगों ने संक्षिप्ताक्षरों का उपयोग इस हद तक करना शुरू कर दिया है कि वे व्याकरण का उपयोग करने के लिए या बातचित को सही तरीके से भूल गए हैं। बस किसी की बात को “शांत” बनाने के लिए, लोग अपना संक्षिप्त रूप बनाते हैं और किसी के सही तरीके को भूलने लगे हैं। यह एक प्रचलित तरीका है जिसमें सोशल मीडिया ने प्राचीन भाषाओं को नष्ट कर दिया है।

सोशल मीडिया की लत बहुत हानिकारक है। यदि कोई व्यक्ति सोशल मीडिया का आदी हो जाता है, तो वह बिना किसी वास्तविक जीवन के बातचीत के घंटों तक बैठ सकता है जो न केवल उनकी आंखों के लिए हानिकारक होगा, बल्कि उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक होगा। इंटरनेट पर तेजस्वी जीवन शैली “सभी शांत लोग ड्रग्स करते हैं” जैसे शब्दों का उपयोग करके नशीली दवाओं के दुरूपयोग का समर्थन करते हैं। इस तरह के बयान युवा किशोरों को इसका हिस्सा बनने के लिए प्रेरित करते हैं।

इसलिए, यह कहा जा सकता है कि यदि उचित रूप से उपयोग किया जाए तो सोशल मीडिया मानवता के लिए एक आशीर्वाद है और गलत तरीके से प्रयोग किए जाने पर सामूहिक विनाश का एक हथियार भी है।

देविका के. दीपक
सुपुत्री, श्री दीपक के. वी.
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

साथी हाथ बढ़ाना

साथी हाथ बढ़ाना, साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा मिल कर बोझ उठाना,
साथी हाथ बढ़ाना ।
हम मेहनतवालों ने जब भी मिलकर क़दम बढ़ाया,
सागर ने रस्ता छोड़ा पर्वत ने शीश झुकाया।
फ़ौलादी हैं सीने अपने फ़ौलादी हैं बाँहें,
हम चाहें तो पैदा कर दें, चट्टानों में राहें,
साथी हाथ बढ़ाना ।
एक से एक मिले तो कतरा बन जाता है दरिया,
एक से एक मिले तो ज़र्रा बन जाता है सेहरा,
एक से एक मिले तो राई बन सकता है पर्वत,
एक से एक मिले तो इन्सान बस में कर ले क़िस्मत,
साथी हाथ बढ़ाना । (साहिर लुधियानवी कृत)

श्री. नारायणनकुट्टी वी.
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वच्छता

स्वच्छता का तात्पर्य हमारे शरीर, मन और हमारे चारों तरफ की साफ-सफाई से है। मानव समुदाय का एक आवश्यक गुण होने के साथ ही यह विभिन्न प्रकार की बिमारियों से बचाव के सरलतम उपायों में से एक है। स्वच्छता जीवन की आधारशिला है, जिसमें मानवीय गरिमा व शालीनता के दर्शन होते हैं। स्वच्छता से मनुष्य की सात्विक वृत्ति को बढ़ावा मिलता है। रोजमर्या के जीवन में हमें अपने घर-परिवार वालों को साफ-सफाई के महत्व के बारे में समझाना चाहिए। अगर हम स्वच्छता के महत्व की बात करें तो मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक और सामाजिक हर तरीके से स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता बहुत जरूरी है। यह मनुष्य का दैनिक कर्म होना चाहिए। भारतीय संस्कृति में वर्षों से यह मान्यता रही है कि जहाँ पर साफ-सफाई होती है वहाँ लक्ष्मी का वास होता है। यहां तक कि भारतीय धर्मग्रन्थों में भी साफ-सफाई और स्वच्छता के बारे में बहुत से निर्देश दिए गए हैं। स्वस्थ मन, शरीर और आत्मा के लिए स्वच्छता बहुत ही महत्वपूर्ण होती है साथ ही आचरण की शुद्धता में स्वच्छता बहुत जरूरी होती है। शुद्ध आचरण से मनुष्य का चेहरा तेजोमय रहता है। सभी लोग उस व्यक्ति को आदर की दृष्टि से देखते हैं। उनके सामने मनुष्य स्वतः अपना सिर झुका देता है। उस व्यक्ति के प्रति लोगों में श्रद्धा होती है। स्वास्थ्य रक्षा के लिए स्वच्छता बहुत अनिवार्य होती है। जब मनुष्य स्वच्छ रहता है तो उसमें एक तरह की स्फूर्ति और प्रसन्नता का संचरण होता है।

साफ-सुथरा रहना मनुष्य का प्राकृतिक गुण है। वह अपने आस-पास के क्षेत्र को साफ रखना चहता है। वह अपने कार्यस्थल पर गंदगी नहीं फैलने देता अगर वह सफाई नहीं रखेगा तो साँप, बिच्छु, मक्खी, मच्छर तथा अन्य हानिकारक कीड़े मकोड़े आपके घर में प्रवेश करेंगें जिससे अनेक प्रकार के रोग और विषैले कीटाणु घर में चारों तरफ फैल जायेंगे। बहुत से लोगों का यह कहना होता है कि यह काम सरकारी एजेंसियों का होता है इसलिए खुद कुछ न करके सारी जिम्मेदारी सरकार पर

छोड़ देते हैं, जिसकी वजह से चारों तरफ गंदगी फैल जाती हैं और अनेक प्रकार के रोग और बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। जब तक हम स्वच्छता के महत्व को नहीं समझेंगे तब तक हम अपने आप को सभ्य और सुसंस्कृत नहीं कह सकते हैं।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए शरीर की सफाई बहुत आवश्यक होती है। ऐसा माना जाता है कि गंदगी और बीमारी हमेशा एक साथ शरीर में जाते हैं। शरीर को स्वस्थ और बिमारियों से रहित रखने के लिए स्वच्छता बहुत ही आवश्यक होती है।

अपने घर और आस-पास के क्षेत्र में साफ-सफाई रखकर हम बहुत से रोगों के कीटाणुओं को नष्ट कर सकते हैं। सफाई रखकर मनुष्य अपने चित्त की प्रसन्नता भी प्राप्त कर सकता है। सफाई मनुष्य को अनेक प्रकार के रोगों से बचाती है। सफाई के माध्यम से मनुष्य अपने आस-पास के वातावरण को दूषित होने से बचा सकता है।

कुछ लोग साफ-सफाई को बहुत कम महत्व देते हैं और ऐसे स्थानों पर रहते हैं जहाँ पर आस-पास कचरा फैला होता है। उन्हें अपने व्यवहार में परिवर्तन करना चाहिए और आसपास के क्षेत्र को साफ और स्वच्छ रखना चाहिए। स्वच्छता का संबंध खान पान और वेश-भूषा से भी होता है।

रसोई की वस्तुओं और खाने पीने की वस्तुओं का विशेष रूप से ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है। बाजार से लाए जाने वाले फल, सब्जी और अनाज को अच्छी तरह से धोकर प्रयोग में लाना चाहिए। पीने के पानी को हमेशा साफ बर्तन में और ढककर रखना चाहिए। गंदे कपड़े कीटाणु युक्त होते हैं इसलिए हमें हमेशा साफ सुथरे कपड़ों का प्रयोग करना चाहिए।

शरीर की स्वच्छता भी बहुत जरूरी होता है। प्रतिदिन स्नान करना चाहिए और अपने शरीर की गंदगी को साफ रखना चाहिए। नाखूनों को बढने नहीं देना चाहिए क्योंकि नाखूनों में होने वाली गंदगी से अनेक प्रकार की बीमारियाँ होती हैं।

जिस प्रकार से घर की साफ-सफाई में घर के सदस्यों की भूमिका होती है उसी प्रकार बाहर की साफ-सफाई में समाज की भूमिका होती है। बहुत से लोग घर की गंदगी को घर के बाहर डाल देते हैं उन्हें घर की गंदगी का निष्पादन ठीक प्रकार से करना चाहिए। आत्मिक उन्नति के लिए सभी निवास स्थानों के वातावरण को साफ और स्वच्छ रखना चाहिए।

स्वच्छता केवल सरकार का ही नहीं वरन् हम सभी का कर्तव्य है। हम सभी देशवासियों को मिलकर स्वच्छता के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन करना चाहिए। समाज के सभी सदस्यों को आसपास की सफाई में अपना योगदान देना चाहिए। नदियों, तालाबों, झीलों और झरनों के पानी में गंदगी को जाने से रोकने के लिए सभी को अपना योगदान देना चाहिए। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाकर वायू को शुद्ध करना चाहिए। मनुष्य में स्वच्छता का विचार उत्पन्न करने के लिए शिक्षा का प्रचार करना चाहिए। शिक्षा पाने मे ही मनुष्य खुद स्वच्छता की ओर प्रवत्त हो जाता है। स्वच्छता उत्तम स्वास्थ्य का मूल होता है।

श्रीमती सिंधू यू पी,
स.ले.प.अ

अजन्मी बेटी की पुकार

तेरी धड़कन से धड़कन जुड़ी है,
तेरी साँसों से साँसें जुड़ी है,
तेरा एक अंश हूँ माँ,
तेरी एक छोटी खुशी हूँ माँ।

अभी तो आँखें खुली ना मेरी,
फिर क्यों आँखें नम हैं तेरी,
क्यों डरती है इस दुनिया से,
तू ढ़ाल बन मेरी इस दुनिया से।

यकीन रख तेरा बोझ नही मैं,
यकीन रख तेरे अश्क नही मैं,
यकीन रख तेरा गर्व हूँ मैं,
यकीन रख तेरी दूआ हूँ मैं।

क्यों बापू तुमसे गुस्सा हैं,
क्या बेटी मै उनकी नहीं,
क्या रखा बेटे में ऐसा है,
जो मुझसे एक बूँद भी प्यार नहीं।

तेरा हर सपना मैंने जाना है,
तेरी हर कसक मैंने जानी है,
तेरी कोख में एक सुख तो है,
तेरी गोद में सुख भी जीना है।

माँ मुझे खुद से दूर ना कर,
सूरज की चमक से दूर ना कर,
मुझे मारने का पाप ना कर,
खुद औरत होने का अहसास तो कर।

माँ तूने ये क्या किया,
खुद से क्यों मुझे तूने विदा किया,
बापू ने तो छीना जीने का अधिकार,
पर तू ही सुन लेती अपनी अजन्मी बेटी की पुकार।

...ऐतिहासिक...

तूलिका

महालेखाकार (सा एवं सा क्षे ले प)

एवं

महालेखाकार (आ रा क्षे ले प) के कार्यालय,

केरला, तृशूर शाखा